13

सुसमाचार का इतिहास

या, यीशु मसीह का निजी मिशन तथा कार्य, 5 ई.पू.-30 ई.[1]

परिचय

1. मसीह बाइबल इतिहास का मसीह प्रमुख व्यक्ति। –बाइबल की सभी रेखाएं मसीह की ओर ही जाती हैं। वह प्रतिज्ञा किया हुआ ''स्त्री का वंश'' था जिसने सर्प के सिर को कुचलना था (उत्पत्ति 3:15), इब्राहीम से की गई वाचा की ''संतान'' था जिसने पृथ्वी के सब लोगों को आशीष देनी थी (उत्पत्ति 12:1-3)। इसमें कोई संदेह नहीं कि मूर्तिपूजकों की मिलती-जुलती उपासनाओं की तरह, पुरखाओं और यहूदी बलिदानों की कई सदियों का अपने आप में बहुत महत्व था। जीवन के बलिदान में अपने आप बोलते, शांति और क्षमा के लिए मानवीय हृदयों की श्रद्धापूर्वक पुकार पाप के विश्वव्यापी होने का आभास ही थी। परन्तु इब्रानी याजकाई और बलिदानों के विशेष महत्व में उनके आदर्श रूप से बाहर से आना था। सदियों के टूटे-फूटे मार्ग पर मनुष्य जाति के छुटकारे के लिए वे उसकी ओर अर्थात ''*परमेश्वर* का मेमना ... जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29) ही ध्यान दिलाते थे। इस प्रकार असंख्य रेखाएं और भविष्यवाणियां मसीह के सिर पर ही जाती हैं। इसी तरह नई वाचा की रेखाएं मसीह की ओर लौट आती हैं। हम मसीह का प्रचार करते हैं, मसीह में विश्वास करते हैं, मसीह का अंगीकार करते हैं और मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, उस दिन मसीह की मृत्यु के स्मरण में भोज लेते हैं जो मसीह के जी उठने की याद दिलाता है। मसीह के द्वारा छुटकारा वह लाल डोरी है जिससे बाइबल की सब पुस्तकें एक पुस्तक के रूप में पिरोई जाती हैं।

2. मसीह संसार के इतिहास का प्रमुख व्यक्ति। –यीशु का जन्म एक निर्णायक घटना है। उसके आने के लिए की जाने वाली तैयारियां अर्थात इब्रानी जाति की पसन्द और उन्हें सम्भालकर रखने का कारण था; सिकन्दर की विजयों और यूनानी भाषा का विस्तार; नियमों, सड़कों और सभ्यता वाले रोमी साम्राज्य का उदय यहूदियों का उनके पवित्र शास्त्र के अनुसार बड़े पैमाने पर बिखरना; यूनानी फिलॉस्फी का खमीर जैसा प्रभाव; मूर्तियों के देवताओं में विश्वास में कमी और पूर्व से एक बड़े हाकिम के उठने की व्यापक आशा। और निश्चित रूप से यह कोई दुर्घटना नहीं थी कि रोमी साम्राज्य मसीहियत को अपने अधिकार में लेने तक चलता रहा और उसने इसे असभ्य लोगों तक पहुंचाया जिन्होंने उसकी धरती को खण्डहर बनाया हुआ था, परन्तु जिनमें से संसार का नक़्शा बदलने वाली बड़ी कौमें निकलनी थीं।

3. इतिहास के स्रोत। –ये चार संक्षिप्त जीवन चरित्र हैं जिन्हें सामान्यतया मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना रचित सुसमाचार कहा जाता है।

क. मत्ती (लेवी) ने यीशु का चेला बनने के लिए चुंगी लेने या टैक्स इकट्ठा करने का काम छोड़ दिया (मत्ती 9:9; मरकुस 2:14)। बाद में उसे बारह प्रेरितों में चुन लिया गया (मत्ती 10:3)। उसने विशेष तौर पर यहूदियों के लिए लिखा। (1) वह पैंसठ बार पुराने नियम की भविष्यवाणी को उद्धृत करता है। एक ही अध्याय में (मत्ती 2:5, 6, 15, 17, 23) देखें। (2) यरूशलेम के लिए उसका पसन्दीदा नाम ''पवित्र नगर'' है (4:5; 24:15; 27:53)। आठ बार वह यीशु को ''दाऊद का पुत्र'' कहता है (1:20; 9:27; 12:23), आदि।

ख. मरकुस यीशु का निजी चेला नहीं था, बल्कि पतरस द्वारा बना चेला था (1 पतरस 5:13) और वह पौलुस के साथ काम करता था (प्रेरितों 13:5; तु. प्रेरितों 12:25; 2 तीमु. 4:11)। उसने स्पष्ट तौर पर गैर यहूदी पाठकों के लिए लिखा, ज़्योंकि वह पुराने नियम से बहुत कम उद्धरण लेता है, और यहूदी रीति रिवाज़ों के सज़्बन्ध में अपने कुछ अप्रत्यक्ष संकेतों की व्याज़्या करता है (2:18; 13:3; 14:12)।

ग. लूका यीशु का निजी चेला नहीं था (1:1–4)। वह एक वैद्य था (कुलु. 4:14) और सबसे पहले पौलुस के सहयात्री के रूप में सामने आता है (प्रेरितों 16:10 और प्रेरितों के काम में ''हम'' वाले अन्य पदों में)।

घ. यूहन्ना आरज़्भिक पांच चेलों में से एक था (1:35–51)। वह प्रेरित बन गया (मत्ती 10:2), और उसे उस चेले के रूप में माना जाता है ''जिससे यीशु प्रीति रखता था'' (13:23; 19:26; 20:2)। पहले वह एक मछुआरा था (लूका 5:1–11)।

मत्ती और लूका यीशु के जन्म और उसकी बाल्यावस्था का वर्णन करते हैं। मरकुस अपनी पुस्तक का आरज़्भ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई और यीशु के बपतिस्मे से करता है। यूहन्ना ने दूसरों की मृत्यु के बहुत देर बाद लिखते हुए, उनकी बहुत सी बातों को निकालकर यीशु की बातों को मिला दिया। वह यीशु के जन्म, बपतिस्मा, परीक्षा, पहाड़ी उपदेश, सभी दृष्टांत, पहाड़ पर रूपांतरित होने, प्रभु भोज आरज़्ज़ करने और गतसमनी में दुखी होने की बातों को छोड़ देता है। पहली तीन पुस्तकों को उनके वृज़ांतों में समानता होने के कारण सिनॉप्टिक गॉस्पल्स या सुसमाचार की समानान्तर पुस्तकें कहा जाता है।

पाद टिप्पणी

[1]एक और ढंग से तिथि निर्धारित करते हुए, इस काल का वैकल्पिक समय 2 ई.पू.–33 ई. है।